2017,16 - मोची राम - 2nd Paper

1) रांपी से उठी हुई ...... मरम्मत के लिए खड़ा है।

=> प्रस्तुत रचना में कवि धूमिल ने मोची के द्वारा समाज में निवास करनेवाले मनुष्य के स्वभाव और चरित्र के बारे में वर्णन किया है। मोची ने कवि को यह कहा है कि सामने समाज के हर आदमी समान है अर्थात न कोई छोटा है न कोई बड़ा है, अर्थात जात-पात का या उच्च-नीच का, धर्म का, वर्ण का कोई भेद नहीं है। हर आदमी उस नोची जूता के समान है जो मोची के सामने मरम्मत के लिए आता है। धर्म का, वर्ण का कोई भेद के नहीं आता है।

2) और असल बात ...... हथौड़ी की तरह

=> : यहाँ कवि धूमिल ने मोची के द्वारा यह कहने की कोशिश की है कि जीवन में सबसे महत्वपूर्ण याह है कि आदमी चाहे जो भी हो और जहाँ कहीं रहता हो वह जूते के नाप से बाहर नहीं है, अर्थात हर आदमी अपने सामर्थ्य अनुसार जीवन निर्वाह करता है और उसे अपने सामर्थ्य के अनुसार ही आगे बढ़ना चाहिए। तभी उसे जीवन में खुशी और आत्म संतुष्टि मिलेगी। और जो भी आदमी अपने सामर्थ्य के बाहर चला जाता है, मन की उच्चाकांक्षाओं से इतना आगे ले जाना चाहता है कि बाद में निराशा और हताशा उसे असामाजिक कार्य करने के लिए मजबूर कर देती है।

फिर भी कवि को हमेशा यह ख्याल रहता है और वह यह अनुभव करता है कि आज भी समाज में सच्चा और साधु इंसान है क्योंकि जब मोची के सामने फटे हुए जूते के बार-बार मरम्मत करने के लिए आता हुआ आदमी हथौड़े की चोट चाटी पर चलता है मोची के अनुसार वही सच्चा इंसान है।

3) यहाँ तरह-तरह की जाँता .... और खड़खड़ा रही है

=> मोची ने कवि को यह भी कहा है कि जिस प्रकार उसके सामने मरम्मत के लिए तरह-तरह के जूते आते हैं उसी के हिसाब से आदमी के अलग-अलग सुख-सूरत, स्वभाव, संस्कार। मगर मोची का कहना है कि जो भी हो मेरे सामने आने का मतलब है जूते की मरम्मत और जूते पहनने का वास्तविक अर्थ है पैदल चलते समय छोटे-बड़े आघातों से बचना या स्वयं को रक्षा करना।

उस अदम आदमी को देखकर जो कि सज्जन इंसान है और संघर्षमय जीवन व्यतीत कर रहा है उस को देखकर मोची को बहुत ही दया आती है। और उसके फटे हुए जूते की दयनीय दशा को देखकर इनकार नहीं कर सकता और स्वयं ही अंतर्द्वंद्व में रहता है। उसी बात को मुहावरा के रूप में टेलीफोन के खम्बे पर फँसे हुए पतंग के साथ तुलना किया है।

4) बाबूजी ! इस पर पॉलिश .... बड़ी मुश्किल से

=> यहाँ मोची ने अपने मन की जो व्यथा है कि वह सच्चे इंसान को कहना चाहता है कि उसकी जूता मरम्मत के लिए अब उपयोगी नहीं है लेकिन वही बात वह उस गरीब और सच्चे इंसान से कह नहीं सकता और उसी समय मोची के मन में अंतर्द्वन्द्व शुरू होता है और तब वह बड़ी करुण स्थिति में उस सच्चे आदमी को दिलासा देने के लिए फटे हुए जूते की मरम्मत मरम्मत करने की अभिनय करता है।

5) एक जूता और है .... और पटरी पर

=> मोची राम ने कवि धूमिल को फिर एक अलग स्वभाव के आदमी के बारे में वर्णन करता है। मोची राम कहना है कि यह जो आदमी है वह न बाबू है वक्त से भी उसे कोई मतलब नहीं है, मगर वह हाथ में घड़ी पहनने की शौकीन है। उसके आँखों में हमेशा लालच भरी हुई होती है उसका कोई काम भी नहीं है मगर लोगो को ऐसा दिखाता है कि उसे में जोम के लिए बड़ी बरबादी है। वह शायद कोई बोनिया या बिसामी है मगर ऐसा अंधकार में रहता जेसे हिटलर का नाती है। वह मोची के सामने आते ही छोटे-मोटे काम के लेकर सड़क पर जितने भी लोग उसके पास से होकर निकलते हैं उसे बाबर की तरह घूरे के साथ ही मौसम के नाम पर विभिन्न प्रकार का आरोप लगाता है। और जब हर्जन होने के बाद पैसा देने की नौबत आती है तब कुछ सिक्के मोचीराम के सामने फेंक कर मोची राम को गाली देता है कि वह सही पैसा को लौटता है।